राजा महेंद्र प्रताप सहि की जयंती

[स्रोत: द हिंदू](#)

चर्चा में क्यों?

भारत के उपराष्ट्रपतजिगदीप धनखड़ ने हाल ही में दूरदर्शी राष्ट्रवादी राजा महेंद्र प्रताप सहि (1886-1979) **की 138 वीं जयंती** पर श्रद्धांजलिअर्पति की।

//

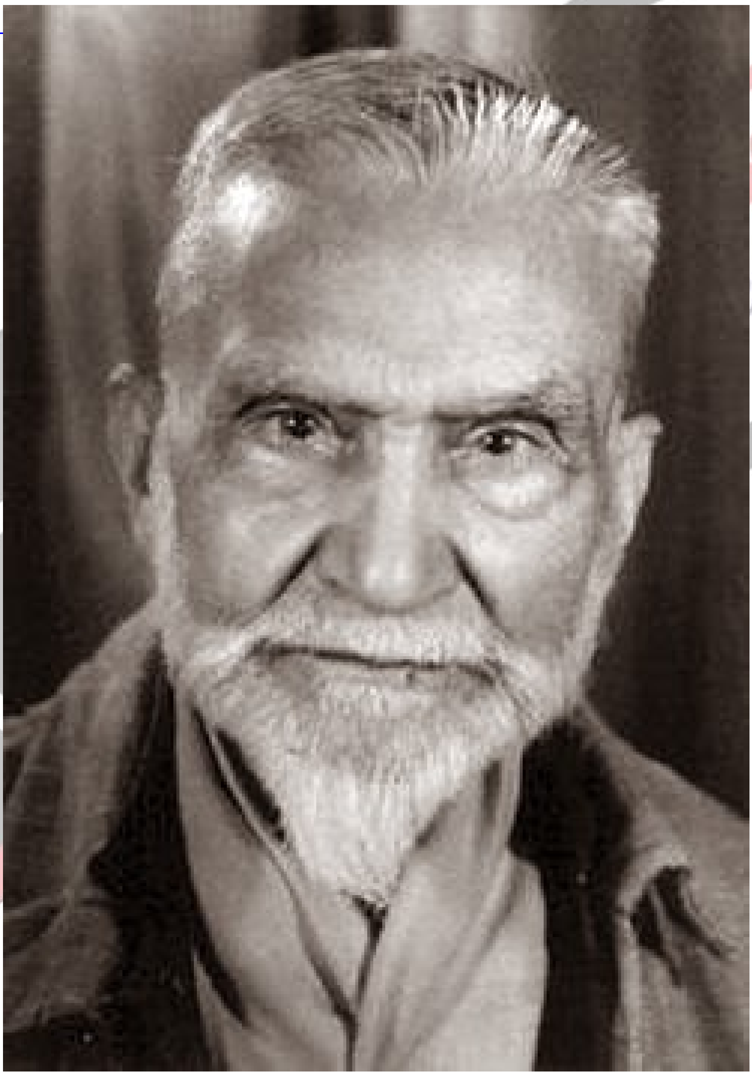

राजा महेंद्र प्रताप सहि कौन हैं?

- **पृष्ठभूमि: राजा महेंद्र प्रताप सहि का जन्म** 1 दिसंबर 1886 को हाथरस, उत्तर प्रदेश में हुआ था।
- वह एक स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी, लेखक, समाज सुधारक और अंतर्राष्ट्रीयवादी थे।

- **शिक्षा में योगदान:** वर्ष 1909 में वृंदावन, उत्तर प्रदेश में एक तकनीकी संस्थान **प्रेम महाविद्यालय** की स्थापना की। यह स्वदेशी तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये **भारत का पहला पॉलिटेक्निक** है।
- **स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान:**
- **वर्ष 1906 में कोलकाता में कॉन्ग्रेस अधिवेशन** में भाग लिया और स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा दिया। महेंद्र प्रताप **स्वदेशी आंदोलन** से भी गहराई से जुड़े थे और स्वदेशी वस्तुओं और स्थानीय कारीगरों के साथ छोटे उद्योगों को लगातार बढ़ावा देते थे।
- महेंद्र प्रताप ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभाई थी। **वर्ष 1915 में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान** उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का विरोध करते हुए **काबुल, अफगानिस्तान** में **भारत की प्रथम प्रोविज़िनल सरकार** (जिसके अध्यक्ष वे स्वयं थे) की घोषणा की थी।
- उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के संघर्ष के क्रम में **जर्मनी, जापान तथा रूस** जैसे देशों से समर्थन मांगा।
- **कहा जाता है कि बोल्शेविक क्रांति के** दो साल बाद **वर्ष 1919 में** उनकी मुलाकात व्लादिमीर लेनिन से हुई थी।
- उन्होंने **द्वितीय विश्व युद्ध** के दौरान वर्ष 1940 में **जापान में भारतीय कार्यकारी बोर्ड का** भी गठन किया।
- **अंतर्राष्ट्रीयवादी और शांति समर्थक:** महेंद्र प्रताप को शांति हेतु वैश्विक पहल एवं **भारत तथा अफगानिस्तान में ब्रिटिश अत्याचारों को सबके सामने लाने में उनके प्रयासों हेतु वर्ष 1932 में** **नोबेल शांति पुरस्कार** हेतु नामांकित किया गया था।
- इस नामांकन में राजा को **"हिंदू देशभक्त", "वर्ल्ड फेडरेशन के एडिटर" तथा "अफगानिस्तान के अनौपचारिक दूत"** के रूप में संदर्भित किया गया।
- वर्ष 1929 में महेंद्र प्रताप ने **बर्लिन में वर्ल्ड फेडरेशन की स्थापना की, जिसका आगे चलकर** **संयुक्त राष्ट्र** के गठन पर प्रभाव पड़ा।
- **राजनीतिक कॅरियर: स्वतंत्रता के बाद उन्होंने पंचायती राज** के विचार को बढ़ावा देने के क्रम में काफी मेहनत की तथा **मथुरा** (वर्ष 1957) से **संसद सदस्य** के रूप में कार्यभार संभाला।
- **विरासत: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में** उनकी प्रमुख भूमिका हेतु आज भी उनको याद किया जाता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/birth-anniversary-of-raja-mahendra-pratap-singh